जैन प्राकृत–संस्कृत प्रयोगोनी पगदंडीए

– हरिवल्लभ भायाणी

१. शब्दप्रयोगो

(१) सं. **चेलक्नोपम्,** (२) प्रा. **पाणद्धि,** (३) दे. **मोरउल्ला,** (४) प्रा. **उट्ठब्भ्** के **उटठुब्भ्** ? (५) दे. **साइतंकार,** (६) गुज. **चणवुं,** हिं. **चुगना.**

१

(१) सं. चेलक्नोपम् 'कपडां तरबोळ बनी जाय तेटलुं (वरसवुं)'

हेमचंद्राचार्यना 'योगशास्त्र' मां योग द्वारा केवलज्ञाननी प्राप्ति थती होवाना संदर्भे वृत्तिमां आपेली भरत चक्रवर्तीनी दृष्टांतकथामां ऋषभदेवना विवाहवर्णनमां, देवगण सहित इंद विवाह माटेनी जे विविध तैयारी करे छे तेमां विवाहमंडपना द्वारे वादळाए जळ वरसाव्यानो निर्देश नीचे प्रमाणे छे :

ववृषुर्मण्डप–द्वारे चेलक्नोपं पयोमुचः । ('योगशास्त्र', १–१०; वृत्ति–श्लोक १,७६.) 'मंडपना द्वार पासे वादळो कपडां तरबोळ बनी जाय तेटलुं वरस्यां.'[१]

सं. **क्नूय्** धातु 'भीनुं थवुं' **(उन्दन)** अर्थमां नोंधायो छे. (पाणिनीय धातुपाठ, १४, १४; हैम धातुपाठ, (०२). तेना प्रेरक अंग **क्नोपय्** (अष्टाध्यायी – ७–३–३६, ८६) परथी **अम्** – प्रत्ययवाळुं संबंधक भूतकृदंतनुं रूप **क्नोपम्,** ज्यारे वस्त्रवाचक पद साथे समस्त थईने वपराय छे, त्यारे ते केटला मोटा प्रमाणमां वरसाद पड्यो ते सूचवे छे. जेम के **चेलक्नोपं / वस्त्रक्नोपं । वसनक्नोपं वृष्टो देवः / मेघः** ('अष्टाध्यायी' – ३–४–३३ उपरनी वृत्तिमां; 'सिद्धहेम' परनी लघुवृत्तिमां).

'शिशुपालवध' मां **वस्त्रक्नोपम्** नो प्रयोग थयो छे. पण संस्कृतसाहित्यमांथी **चेलक्नोपम्**–नो कोई प्रयोग नोंधायो नथी. वैयाकरण हेमचंद्राचार्ये करेला तेना प्रयोगने बीजा कोई प्रयोग ध्यानमां न आवे त्यां सुधी अनन्य गणवानो रहेशे.[२]

---

१. चेलार्थेषु कर्मसूपपदेषु क्नोपेर्णमुल् स्याद् वर्षप्रमाणे । यथा वर्षणेन चेलानि क्नोप्यन्ते तथा वृष्ट इति चेलक्नोपं वृष्टः ॥ तथा चेलार्थाद् व्याप्यात् परात् क्नोपयतेस्तुभ्यकर्तृकार्थाद् वृष्टिमाने गम्ये धातोः सम्बन्धे णम् वा स्यात् ॥

२. उपयुक्त संदर्भ :– संस्कृत अंग्रेजी कोश. मोनिअर विलिअम्झ.
'धातुरूपकोश.' धर्मराज नारायण गांधी. 'योगशास्त्र'. संपादक, मुनि जंबूविजयजी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) प्रा. पाणद्धि 'शेरी', 'गली'.

हेमचन्द्राचार्यकृत 'देशीनाममाला' मां (६–३९) **पाणद्धि** शब्द 'रथ्या'ना अर्थमां आपेलो छे. प्राकृतकोशमां तेनो साहित्यमां थयेलो कोई प्रयोग नोंधायो नथी. पण भोजकृत 'सरस्वती–कंठाभरण' (पृ. ६३५) अने 'शृंगारप्रकाश' (पृ. ७९०, ११९७) मां टांकेली नीचेनी उदाहरण–गाथामां तेनो प्रयोग मळे छे. (जुओ, वी. एम. कुलकर्णी, ग्रंथ – १, पृ. १६० (क्रमांक ५९२), ग्रंथ – २, पृ. ६५, ८०५.).

हंहो कण्णुलीणा भणामि रे किंपि सुहअ मा तूर ।
णिज्जण – पाणद्धी – संकडम्मि पुण्णेहिं लद्धो सि ।।

'अरे सुभग, जवानी उतावळ न कर. मारे तने कांईक कानमां कहेवुं छे.आगला भवनां पुण्ये तुं सांकडी निर्जन गलीमां भेगो थयो छे'. *

(३) दे. मोरउल्ला 'व्यर्थ'

सिहे. ८–२–२१४ मां **मोरउल्ला** क्रियाविशेषण **मुधा** 'निरर्थक, नकामुं'एवा अर्थमां आप्यो छे. पासम. मां **मोरकुल्ला** एवुं रूप पण नोंध्युं छे, अने तेनो प्रयोग 'चउपन्न–महापुरिसचरिय', 'कुमारपालचरित' (**मा तम्म मोरउल्ला** 'तुं निरर्थक दुःखी न था', ४, २०) अने 'सुमतिजिन–चरित्र' मां थयो होवानुं जणाव्युं छे. रत्नप्रभसूरिकृत 'उपदेशमाला – दोघट्टी–वृत्ति' (ई.स. ११८२)मां पण एनो प्रयोग मळे छे : **मरेसु मा मोरउल्लाए** 'निरर्थक न मर' (पृ. ८, पद्य ८७).

---

* कंठपरंपराना एक वैष्णव धोळनी पंक्तिओ सरखावो :

सांकडी शेरीमां श्री वल्लभ मळ्या, बोल्या कांई वेण–कवेण,
श्री वल्लभ विना घडी नहीं चाले.

(४) उट्ठब्भ्– के उट्ठुब्भ्– ?

'सिद्धहेम' ८, ४, ३६५ नीचे (अपभ्रंश – विभागमां), सं. **इदम्** नुं स्थान अपभ्रंशमां **आय** ले छे ते दर्शाववा आपेलां त्रण उदाहरणोमां त्रीजुं नीचे प्रमाणे छे :

आयहो दड्ढ–कलेवरहो, जं वाहिउ तं सारु ।
जइ उट्ठब्भइ तो कुहइ, अह डज्झइ तो छारु ।।

शरीरनुं असारपणुं दर्शाववा आ दोहामां कह्युं छे के मृत्यु थतां शरीर कां तो सडी जाय छे, नहीं तो (जो तेने बाळी मूकवामां आवे तो) राख थई जाय छे. आमां **उट्ठब्भइ**नो (१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दोधकवृत्ति' मां **आच्छाद्यते** (= ढांकी रखाय) = **स्थाप्यते** (= राखी मुकाय) एवो अर्थ कर्यो छे. वैद्यो अने में पण तेनुं अनुसरण कर्युं छे. पिशेले 'दाटी देवाय' एवो जे अर्थ कर्यो छे, तेनी टीका करतां आल्स्डोर्फे सूचव्युं छे के 'राखी मूकवामां आवे' (एटले के 'दाटी देवामां न आवे') तो शरीर सडी जाय –एवो अर्थ ज बंध बेसे. व्यासे आनी नोंध लीधी छे.

योगीन्दुदेवना 'परमप्पपयास' मां आ दोहानुं रूपांतर नीचे प्रमाणे मळे छे :

बलि किउ माणुस–जम्मडा , देक्खंतहं पर सारु ।
जइ उट्ठब्भइ तो कुहइ, अह डज्झइ तो छारु ॥

उत्तरार्ध उपरना दोहा साथे समान छे. पूर्वार्ध थोडोक जुदो छे, पण सडवानी के राख थवानी वात मनुष्यशरीरने लागु पडे तेम मनुष्य जन्मने सीधी लागु न पडी शके – एटले उपरना सुसंगत अर्थ वाळा दोहानुं आ कांईक नबळुं रूपांतर जणाय छे. अहीं ब्रह्मदेवनी संस्कृत वृत्तिमां **उट्ठब्भइ**नो **अवष्टभ्यते** एवी छाया आपीने **भूमौ निक्षिप्यते** एवो अर्थ कर्यो छे. परंतु **उट्ठब्भ** – नो 'राखी मुकवुं, पडयुं रहेवा देवुं' के 'दाटी देवुं' एवा अर्थनो कोई अन्य प्रयोग नोंधायो नथी.

हकीकते **उट्ठब्भइ** पाठ भ्रष्ट छे. तेने बदले **उट्ठुब्भइ** जोईए. सं., **स्तुभ्** उपरथी थयेला **छुभ्** नो अर्थ 'बहार फगावी देवुं' एवो थाय छे. पालि **निछुभति, निट्ठहइ** नो अर्थ 'गळुं खंखारीने थूंकी काढवुं' एवो छे. धातुपाठमां **स्तुभ्** धातु 'निष्कासन'ना अर्थमां आप्यो छे. प्राकृत **उट्ठुभ्** नो पण एवो अर्थ छे. पण प्रा. उच्छूढ (उट्ठुभ् नुं भूतकृदंत)नो 'त्यक्त, निष्कासित, उज्झित' एवो अर्थ पासम. मां आप्यो छे अने प्रयोगनां उदाहरण तरीके **उच्छूढ–सरीर–धरा** आपेल छे. आ संदर्भमां शरीरने संस्कारथी–परिकर्मथी वंचित राखवुं, साफसूफी अने सजावट प्रत्ये उपेक्षा सेववी एवो अर्थ छे. पण उपर्युक्त बधा संदर्भो जोतां 'नाखी देवुं,' 'उपेक्षाभावे एमने एम पडयुं रहेवा देवुं' एवो अर्थ सहेजे लई शकाशे, अने ते हेमचंद्राचार्ये उद्धृत करेल दोहा माटे बंधबेसतो थाय छे, एटले पाठ **उट्ठब्भइ** नहीं, पण **उट्ठुब्भइ** होवो जोईए.

(५) दे. साइतंकार 'विश्वस्त, सप्रत्यय'

हरिभद्रसूरिनी 'आवश्यक–वृत्ति' मां **साइतंकार** (२, पृ. १४२) अने 'पिंडनिर्युक्ति–भाष्य'मां **साइयंकार** (३३मां) 'विश्वस्त', 'सप्रत्यय' एवा अर्थमां वपरायो होवानुं 'देशी शब्दकोश' मां नोंध्युं छे अने ते माटे नीचे प्रमाणे उद्धरणो आपेल छे :

(१) जं च राएण उल्लवियं साइतंकारो तेण तं पत्तए लिहियं ।
(२) पुच्छा समणे कहणं साइयंकार – सुमिणाई ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवृ. मां जे **शब्दरूप** मळे छे ते तृश्रुति वाळुं छे. एटले मूळ **साइयंकार** ज छे. पासम. मां **साइयंकार** माटे पिंभा. ४२ नो निर्देश छे. अपभ्रंशमां **साइउ** शब्द 'आलिंगन' ना अर्थमां वपरायो छे. **साइउ देइ** एटले 'स्नेहीजनने मळतां तेने 'भेटे छे'. गुजरातीमां 'सांई' आ ज अर्थमां प्रचलित छे. परगाम रहेता स्वजनने माटे ते गाम जनारने 'एमने मारा वती सांई देजो' कहेवानो रिवाज छे. कहेवत छे के 'नहीं संदेशो के नहीं सांई, तमे त्यां ने अमे आंही'. एटले 'कुशळप्रश्न', 'कुशळवार्ता' एवो अर्थ विचारणीय छे.

(विगत माटे जुओ रत्ना श्रीयान, Des'ya and Rare Words from Puspadanta's Mahapurana १९६९).

(६) गुज. चणवुं, हिं चुगना

गु. **चणवुं** नो एक अर्थ छे 'चांचथी एक एक दाणो पकडी गळी जवानी पक्षीनी क्रिया.' **चण** (स्त्री.) एटले 'पक्षीओने माटे आ सारु नखाता अनाजना दाणा.'

वृ.गु.को. मां एना मूळ तरीके सं. **चिनोति** 'एकठुं करवुं, ढगलो करवो', आप्यो छे. प्रा. **चिणइ**नो पण 'फूल वगेरे चूंटीने एकठां करवां' एवो अर्थ छे.

प्राकृतमां **चिणइ** उपरांत **चुणइ** पण मळे छे. हेमचंद्रे अनियमित रीते एक स्वरनुं स्थान बीजो स्वर लेतो होवानुं गणीने **चुणइ**ने **चिणइ** उपरथी थयेलो मान्यो छे (सिहे. ४.२३८). टर्नरे **तुन्न** जेवाना प्रभावे **इ** नो **उ** थयानुं सूचव्युं छे (**इ लें.** '४८१४'). अर्थ थोडोक बदलायो छे. **काओ लिंबोहलिं चुणइ** (पासम.) एवा प्रयोगमां 'चांचथी ठोलीने खावुं' एवो अर्थ छे, जे 'चणवा'ना अर्थनी निकट छे. एथी **चणवुं** ना मूळ तरीके प्रा. **चिणइ** नहीं पण **चुणइ** ज स्वीकारवानो रहे.

आनुं समर्थन चौदमी शताब्दी लगभगना एक जैन पुरातन प्रबंधथी मळे छे. (मुनि जिनविजय संपादित 'पुरातन प्रबंध संग्रह' मां G संज्ञक हस्तप्रतमांथी आपेल भोजराजाना वृत्तान्तमां, पृ. २२ उपरनो, परिच्छेद ४१ नीचे आपेलो प्रसंग). भोजराजानी सवारी नीकळी त्यारे सौ तेने नमस्कार करता हता, पण एक हाटमां उभेला एक माणसे नमस्कार न कर्या. राजाए तेनी सामे जोयुं एटले तेणे त्रण आंगळी ऊंची करीने बतावी. राजाने ए संकेत समजायो नहीं. बीजे दिवसे त्यांथी राजानी सवारी नीकळी त्यारे पेलाए बे आंगळी अने त्रीजे दिवसे एक आंगळी ऊंची करीने राजाने बतावी. पछी भोजे तेने बोलावीने संकेतोनो खुलासो पूछयो. एटले ते माणसे कह्युं 'पहेली वार आपनां दर्शन कर्यां त्यारे मारे घरे त्रण दिवसनी **चूणि** हती, पछी बे दिवसनी, पछी एक दिवसनी. राजाने नमस्कार करीने पण शुं ?' अहीं **चूणि** एटले **'चण'** – एटले के 'पेट पूरतुं अनाज.' एटले भोजे तेने वर्षासन बांधी आप्युं.

अहीं **चूणि** रोज खावाना अनाज माटे लाक्षणिक अर्थमां वपरायो छे. **चुणइ** उपरथी मध्यकालीन गुजरातीमां थयेला उ > अ एवा परिवर्तनने परिणामे **चणवुं** थयो. पण अहीं तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीर्घ ऊ वाळो **चूणि** छे, अने गुजराती कोशोमां पण **चूणवुं, चूण** एम दीर्घ स्वरवाळां रूप नोंधायां छे. आनो खुलासो मेळववानो रहे छे. **चुणि** उपरथी **चण** थाय, **चूणि** उपरथी **चूण**.

हिंदी वगेरेमां चणवाना अर्थमां **चुगना** के **चूंगना** छे. पंजाबीमां **चोग्गा** एटले 'चण'. टर्नरे ए धातुओ अने तेमांथी साधित शब्दो माटे मूळ तरीके **चुग्यति** के **चुंगति** होवानुं मान्युं छे. ('इलें' ४८५२, ४८५३, ४९१९, ४९२०). पण सादृश्यनो आधार लईने ए धातुने अने साधित शब्दोने **चुणइ** साथे जोडी शकाय तेम छे. **चिणइ** उपरथी कर्मणि **चिव्वइ, चिम्मइ** अने **चिज्जइ** थाय छे. ते अनुसार **चुणइ** उपरथी कर्मणि **चुज्जइ**. अने पछी जेम प्राकृत **भज्जइ**, भू. कृ. **भग्ग, रज्जइ – रग्ग, वज्जइ – वग्ग** वगेरे तेम **चुज्जइ – चुग्ग**. अने ए भूतकृदंत परथी धातु **चुगना** अने नाम **चोग्गा** वगेरे सधाया.

२. छंदचर्चा, पाठचर्चा वगेरे

(१). सिहे. ८–४–३३० ना उदाहरणनो पाठ अने छंद

'सिद्धहेम' ना अपभ्रंश विभागना ३३० मा सूत्र प्रमाणे नामिक विभक्तिना प्रत्यय पूर्वे नामना अंगनो अंत्य स्वर ह्रस्व होय तो दीर्घ थाय छे, अने दीर्घ होय तो ह्रस्व थाय छे. तेनुं उदाहरणपद्य नीचे प्रमाणे छे :

ढोल्ला सामला धण चंपावण्णी ।
णाइ सुवण्ण–रेह कसवट्टइ दिण्णी ।

'नायक शामळो छे, नायिका चंपावर्णी छे. जाणे के कसोटीना पथ्थर पर सोनानी रेखा पडी होय (तेवां ते शोभे छे.)'. दोग्धकवृत्ति अनुसार अहीं नायक – नायिकाना विपरीत रतनी परिस्थितिनुं वर्णन छे.

अहीं समस्या ए छे के उदाहरणपद्यनो छंद जे रूपे पाठ सचवायो छे ते रूपमां अनियमित छे. एकी चरणोमां कां नव मात्रा जोईए, कां तो दस. पण उपर आपेला पाठमां पहेला चरणमां नव मात्रा छे, पण त्रीजा चरणमां दस. आ बाबत तरफ अपभ्रंश व्याकरणना संपादको – संशोधकोनुं ध्यान नथी गयुं.

'पुरातन प्रबंध संग्रह' (संपा. जिनविजय मुनि, सिंजैग्र., २, १९३६)नी ई. स. १४ मी शताब्दीनी G हस्तप्रतमां आपेल भोजचरित्रमां एवो प्रसंग छे (पृ. २०–२१ परिच्छेद ३६) के मालवपति मुंजे ज्योतिषीने पूछतां तेणे जणाव्युं के तमने पुत्र थशे नहीं, पण श्रावण सुद पांचमना पहेला प्रहरे जे तमारी समस्या पूरशे ते तमारा पछी राजा थशे. ते दिवसे मुंजे कोईक प्रासादमां रहेला श्याम पति अने गोरी पत्नीने जोयां अने तेने पद्यार्ध स्फुर्युं : **ढुल्लउ सामलउ धण चंपावन्नी ।** एनी समस्यापूर्ति बीजा कोईथी न थई शकी, पण भोजे ते करी : **छज्जइ**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणयारह कसवट्टइ दिन्नी. आमां बे–त्रण बाबत ध्यानपात्र छे. पहेलुं तो ए के हेमचंदना उदाहरणमां **ढोल्ला सामला** छे त्यारे अहीं छे **दुल्लउ** (के **ढोल्लउ**) **सामलउ**. अंत्य **अ** नो आ थयानुं उदाहरण आपवानुं होवाथी हेमचंद्राचार्य समक्ष **ढोल्ला सामला** एवो पाठ ज होई शके. पण आ प्रकारनां कंठपरंपरामां प्रचलित रहेलां पद्योनो पाठ केटलेक अंशे प्रवाही रहेतो. तेमां शब्दस्वरूपनी पण एकवाक्यता घणी वार नथी जोवा मळती. प्रथमा एकवचन जे बोली–प्रदेशमां अउ प्रत्ययवाळुं हतुं ते प्रदेशनो आ पाठ छे.

बीजुं **कणयारह** पाठ भ्रष्ट छे. तेने स्थाने **कणय**–रेह जोईए. रुनी पडिमात्रा **य** नो कानो बनी गई छे.

त्रीजुं, हेमचंद्रीय उदाहरणना उत्प्रेक्षावाचक **णाइं** ने स्थाने अहीं **छज्जइ** छे. ए पाठमां, संदर्भथी समजाइ जतुं जे अनुक्त राख्युं छे ते खुल्लुं व्यक्त थयुं छे. एटले एने पाछळनो पाठ गणी शकीए. आम

ढोल्ला सामला (के ढोल्लउ सामलउ), धण चंपावन्नी ।
नाइं कणय–रेह, कसवट्टइ दिन्नी ।।

एवा पाठमां छंदनी अशुद्धि रहेती नथी. ९+ १०, ९ + १० मात्राना मापवाळी आ मलयमारुत नामना छंदनी आंतरसमा चतुष्पदी छे.

'स्वयंभूछंद' नुं मलयमारुतनुं उदाहरण :

गोरी अंगणे, सुप्पंती दिट्ठा ।
चंदहो अप्पणी, जोण्ह वि उव्विट्ठा ।। (स्वछं० ६ – ४२, ९१)
('स्वयंभूछंद' मां **विउव्विट्ठा** पाठ भ्रष्ट छे.)

'आंगणामां सूतेली गोरीने जोई एटले पछी चंदने पोतानी ज्योत्स्ना पण अबखे पडी.'

'छंदोनुशासन'नुं उदाहरण :

देक्खिवि वेल्लडी, मलय–मारुअ–धुआ ।
सुमरिवि गोरडी, पंथिअ–सत्थ मुआ ।। (छंदो० ६–१९, २०)

'मलयपवने कंपती वेलडीने जोईने पोतानी गोरी सांभरी आवतां पथिको मरणशरण थया.'

'कविदर्पण' (१३मी शताब्दी लगभग)मां आपेलुं मलयमारुतनुं उदाहरण ('कोईकनुं छे' एवा उल्लेख साथे) पण जोईए :

तत्ती सीयली, मेलावा केहा ।
धण उत्तावली, प्रिय –मंद–सिणेहा ।। (वेलणकर–संपादित पृ. २३, १४–२).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'तप्त अने शीतल वस्तु वच्चे मेळाप क्यांथी होय ?
नायिका उतावळी, पण नायकनो स्नेह मंद.'

(२). सिहे. ८–४–३९५(१)नो पाठ, अर्थ

सिहे ८–४–३९५(१)मां, सं. **तक्ष्** ना **छोल्ल** एवा आदेश माटे नीचेनुं उदाहरण आपेलुं छे (बीजी आवृत्तिमां आपेल पाठ अने अनुवाद सुधारवानो छे) :

जिवँ जिवँ तिक्खालेवि किर, जइ ससि छोल्लिज्जंतु ।
तो जइ गोरिहे मुह–कमलि, सरिसिम का–वि लहंतु ॥

'गमे तेम करीने, मानो के, चंदने वधु चकचकतो करवामां आवत तो ते कदाच आ गोरीना मुखकमळ साथे किंचित् समानता प्राप्त करत.'

रत्नप्रभसूरिकृत 'उपदेशमाला–दोघट्टी–वृत्ति' (ई.स. ११८२)मां जिनशासननी उज्ज्वळता दर्शावतुं विशेषण **छोल्लिय–छण–मय–लंछण–च्छाय** 'चकचकित करेला (कलंक घसी काढेला) पूनमना चंद्रनी कान्तिवाळुं' वपरायुं छे (पृ. १११, पद्य ४१).

(३). सिहे. ८–४–४२२ (२)नो पाठ, अर्थ

सिहे. ८–४–४२२(२) मां, **झकट** (खरेखर तो संकट)ना **घंघल** एवा आदेश माटे नीचेनुं उदाहरण आपेलुं छे :

जिवँ सु–पुरिस तिवँ घंघलइँ, जिवँ नइ तिवँ वलणइँ ।
जिवँ डुंगर तिवँ कोट्टरइँ, हिआ विसूरइ काइँ ॥

रत्नप्रभसूरिकृत 'उपदेशमाला–दोघट्टी–वृत्ति' **(इ.स. ११८२)मां ते ज (थोडा पाठांतरथी)** आपेलुं छे (पृ. ९८, पद्य ५१) :

जहिं सु–पुरिस तहिं घंघलइं, जहिं नइ तहिं वलणाइं ।
जहिं डुंगर तहिं खोहरइं, सुयण विसूरहि काइं ॥

अहीं **खोहरइं** पाठ (**कोट्टरइं** ने बदले) शंकास्पद लागे छे. प्राकृतमां **खोहर** शब्द मळतो नथी. हिंदीमां **खोह** (गुज. **खो**) छे खरो, ज्यारे गुज. मां **कोतर** (तकार साथे) तो मळे ज छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४). 'छंदोनुशासन' गत प्राकृत छंदप्रकार द्विभंगीनां उदाहरणोनी पाठचर्चा

१. 'छंदोनुशासन' मां हेमचंद्राचार्ये सामान्य रीते स्वरचित उदाहरणो आप्यां छे. ज्यां कोई पूर्ववर्ती ग्रंथना उदाहरणनो उपयोग कर्यो छे, त्यां पण उदाहरणमां छंदनुं नाम गूंथवानुं होवाथी तेमणे जरूरी फेरफार कर्या छे. पण केटलीक वार कोई पूर्ववर्ती स्रोतमांथी उदाहरण उद्धृत करेल छे. जेम के चोथा अध्यायना ८७मा सूत्र नीचे विविध छंदोना संयोजनथी थती द्विभंगीओ तरीके (१) गाथा + भद्रिका, (२) वस्तुवदनक + कर्पूर, (३) वस्तुवदनक + कुंकुम, (४) रासावलय + कर्पूर, (५) रासावलयक + कुंकुम, (६) वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण + कर्पूर, (७) वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण + कुंकुम, (८) रासावलय अने वस्तुवदनकनुं मिश्रण + कर्पूर, (९) रासावलय अने वस्तुवदनकनुं मिश्रण + कुंकुम, (१०) वदनक + कर्पूर, (११) वदनक + कुंकुम – एटला छंदप्रकारोनां उदाहरण संभवतः कोई पूर्ववर्ती छंदोग्रंथमांथी लीधेलां छे. आमांनां आठ उदाहरण 'कविदर्पण' मां पण मळे छे. 'कविदर्पण'कारे 'छंदोनुशासन'मांथी ते लीधां होय एवो प्रबळ संभव छे, केम के केटलेक स्थळे तेणे 'सिद्धहेम' ना प्राकृत विभागमांथी प्रयोगना समर्थन माटे उद्धरण आप्यां छे. जो के थोडाक पाठ भिन्न छे. आमांथी रासावलय अने कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण नीचे प्रमाणे छे.

परहुअ–पंचम–सवण–स्भय मन्नउं स किर
तिंभणि भणइ न किं पि मुद्ध कलहंस–गिर ।

चंदु न दिक्खण सक्कइ जं सा ससि–वयणि
दप्पणि मुहु न पलोअइ तिंभणि मय–नयणि ॥

वइरिउ मणि मन्नवि कुसुम–सरु, खणि खणि सा बहु उत्तसइ ।
अच्छरिउ रूव–निहि कुसुम–सरु, तुह दंसणु जं अहिलसइ ॥

('कविदर्पण' मां 'कलयंठि–गिर' अने 'मन्निवि' पाठ छे ते वधु सारा छे. छेल्ली पंक्तिमां 'कुसुम–सर' एवो पाठ जोईए, ते संबोधन होवाथी).

'हुं मानुं छुं के ते मुग्धा कोकिलनो पंचम सूर सांभळवाथी डरे छे, अने ते कारणे ज ते कोकिलकंठी पोते कशुं ज बोलती नथी. ए चंदवदना चंद जोई शकती नथी, ते कारणे ए दर्पणमां पोतानुं मुख जोती नथी. मनमां रहेला कंदर्पने शत्रु मानीने ते क्षणे क्षणे घणो त्रास पामी रही छे, ने तेम छतां ए एक अचरज छे के हे रूपनिधि कंदर्प, ए तारुं दर्शन करवानी अबळखा सेवे छे.'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हवे दसमी शताब्दीमां रचायेली धनंजयना 'दशरूपक' उपरनी धनिकनी 'अवलोक' टीकानी एक हस्तप्रतमां चोथा प्रकाशनी ६६मी कारिका उपरनो जे पाठ मळे छे तेमां प्रवास-विप्रयोगमां प्रवासचर्चानुं नीचेनुं एक उदाहरण मळे छे. (ए ज पद्य ई.स. १२५८ मां रचायेल जल्हणकृत 'सूक्तिमुक्तावलि' मां पण मळे छे) :

नीरागा शशलांछने मुखमपि स्वे नेक्षते दर्पणे
त्रस्ता कोकिलकूजितादपि गिरं नोन्मुद्रयत्यात्मनः ।
चित्रं दुःसह-दुःख-दायिनि कृत-द्वेषाऽपि पुष्पायुधे
मुग्धा सा सुभग ! त्वयि प्रतिकलं प्रेमाणमापुष्यति ॥

स्पष्टपणे आ बे अपभ्रंश अने संस्कृत पद्योमांनुं कोई एक बीजानो चोख्खो अनुवाद ज छे. कयुं पूर्ववर्ती अने कयुं पश्चाद्वर्ती एनो निर्णय दुष्कर छे.

आनुषंगिक नोंध : उपर 'छंदोनुशासन'मां आपेलां जे द्विभंगीप्रकारोनां उदाहरणोनो निर्देश कर्यो छे तेना प्रा. वेलणकरना संपादनमां आपेला पाठमां केटलाक सुधारा करवा इष्ट छे. ते नीचे प्रमाणे छे :

१. त्रीजा प्रकारनुं उदाहरण : पहेली पंक्तिमां **किनरि विक्खरहि** ने बदले **कि न रि विक्खिरहि** (पाठांतर) जोईए.

२. चोथा प्रकारनुं उदाहरण : उपर सूचव्युं छे तेम बीजी पंक्तिमां **कलयंठि-गिर** ('कविदर्पण' नो पाठ) अने **मन्निवि** (पाठांतर) जोईए, अने अर्थने अनुसरीने **कुसुमसर** जोईए.

३. पांचमुं उदाहरण : पहेली, त्रीजी अने पांचमी पंक्तिने आरंभे **जइ अ** के **जइ** छे त्यां **जइअ** (= **यदा**) जोईए. आने एक पाठांतरनुं पण समर्थन छे. टीकाकारे पण संपादकनी जेम **यदि** अर्थ कर्यो छे ते बराबर नथी. 'सिद्धहेम' ८-४-३६५ नीचे **यदा**ना अर्थमां प्राकृतमां **जाहे, जाला, जइआ**नो प्रयोग थतो होवानुं नोंध्युं छे.

बीजी पंक्तिमां **कुसुमदलम्मि** पाठ करतां °**दलग्गि** पाठ वधु सारो छे. पांचमी पंक्तिमां **वयणगुंफ**ने बदले उकार जाळवतो **वयणगुंफु** पाठ वधु सारो छे.

४. छट्ठुं उदाहरण : **करिहि** ने बदले **करहि, इच्छि** मर्थ्न्छ **इ पणयमुहुं** ने बदले **इच्छि म इच्छि पणयउ-सुहु** ('कविदर्पण'नो पाठ), अने अंतिम पंक्ति **माणिक्किमणंसिणि करिव वलु, हेल्लि खेल्लि ता जूउ तुहुं** ने बदले **माणिक्कि मणंसिणि करि ठवलु, हेल्लि खेल्लि ता जूउ तुहुं** जोईए. आ छेल्ली पंक्तिनो अर्थ टीकाकार पण खोटा पाठने कारणे समज्यो नथी. तेणे **तदा हे हस्तिगमने प्रणतमुखं भर्तृमुखं 'इच्छि' दृष्ट्वा हे मानैक-मनस्विनी हे सखि बलं अपि कृत्वा क्रीडितुं युक्तं तव ।** एवो अर्थ कर्यो छे, जे तद्दन भ्रान्त छे. **मानम् एकं (श्लेषथी माणिक्यम्) हे मनस्विनि कृत्वा दायम्, हे सखि रमस्व तावत् द्यूतं त्वम् ।** अहीं **ठवलु** एटले 'जुगारनी बाजीमां जे होडमां मुकाय ते, दाव.' ए अर्थमां **ठउलु**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दनो प्रयोग स्वयंभूकृत 'उमचरिउ' मां पण मळे छे. त्यां पण रणभूमिने शारिपट्टनुं उपमान आपीने तेमां जीवनने होडमां मूकवानुं रूपक छे.

५. सातमुं उदाहरण : त्रीजी पंक्तिमां **ल्हसडउ** ने बदले **ल्हुसडउ (= लुण्टाकः)** जोईए. छेल्ली **झुलक्कइ** ने बदले **झुलुक्कउ** जोईए. (आठमा उदाहरणनी बीजी पंक्तिमां ए ज पाठ छे.)

६. आठमुं उदाहरण : **सहि इ** ने बदले **सहिइ** जोईए. छेल्ली बे पंक्तिनो अर्थ टीकाकार समज्यो नथी. **तुहने** बदले **तुहुं**, **मयणबाणवेयण कलह** ने बदले **मयणबाण – वेयण-कलहि** अने तुलहने बदले तुलहि पाठ जोईए. 'हे तन्वंगी, तुं जेमां मदनबाणनी वेदना छे तेवा प्रेमकलहमां लथडती पड नहीं. हे मानिनी, वल्लभ साथेनुं मान तजी दे, तारा प्राणनी संशयतुला उपर चड नहीं.'

७. नवमुं उदाहरण. पांचमी पंक्ति. **पयड थाइने** बदले **पयडत्थय** (कविदर्पण नो पाठ) जोईए.

८. दसमुं उदाहरण बीजी पंक्तिमां **पहिल्लय** ने बदले **पहल्लिय** (पाठांतर)अने छेल्ली पंक्तिमां **जाइ॰ जाय॰** ने बदले **जाइजाय॰** जोईए ।

(५). काव्य-गुंफ

काव्य रचवानी क्रिया-प्रक्रिया माटे संस्कृत काव्य अने काव्यशास्त्रनी परंपरामां वस्त्र गूंथवा के वणवानुं उपमान घणुं जाणीतुं छे. संस्कृत काव्यशास्त्रमां काव्यनी रचना अने बंध विशेनी चर्चामां 'गुंफ' संज्ञा वपराई छे. गुंफ नामना अलंकारमां वर्ण, अर्थ, पद, वाक्य वगेरेनी विशिष्ट पसंदगी अने क्रममां गोठवणी करवानो ख्याल समाविष्ट थयो छे. राघवने 'शृंगार-प्रकाश'ना पोताना अध्ययनमां आ विषय विगते चर्च्यो छे.

ग्रथ्नामि काव्य-शशिनं विततार्थ-रश्मिम् ।

('अर्थरूपी किरणोना विस्तारवाळो काव्यरूपी चंद्र हुं गूंथी रह्यो छुं')ए चरण जो के वामने (अने तेने अनुसरीने मम्मटे), उपमादोषो गणावतां, सादृश्य निराधार होवाथी उत्पन्न थता अनौचित्य-दोषना उदाहरण तरीके आप्युं छे, तो पण तेमां काव्य 'गूंथवानी' वातनो उल्लेख छे ए नोंधवुं घटे.

आ संदर्भमां प्रभाचंद्रकृत 'प्रभावकचरित' मां आपेल हेमचंदसूरिचरितमां मळतुं (पृ. १९०) तत्कालीन देवबोध कविनुं नीचेनुं पद्य पण नोंधपात्र छे. ए एक अन्योक्ति छे. वाच्यार्थ छे –गामठी वणकर, तेनाथी वणातां वस्त्र, अने वस्त्र पहेरनारी सुंदरी. गम्यार्थ छे – कवि, रचातां काव्यो अने सहृदय भावको.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रातर् ग्राम-कुविन्द कन्दलयता वस्त्राण्यमूनि त्वया
गोणी-विभ्रम-भाजनानि बहुशोऽप्यात्मा किमायास्यते :
अप्येकं रुचिरं चिरादभिनवं वासस् तदासूत्र्यते
यन् नोज्झन्ति कुच-स्थलात् क्षणमपि क्षोणीभृतां वल्लभाः ॥

'हे भाई ! गामठी वणकर, आवां गुणपाट समां ढगलाबंध वस्त्रो वणीने तुं शा माटे नकामुं कष्ट वेठी रह्यो छे ? तुं जोईए तेटलो समय लईने पण मात्र एक ज एवुं सुंदर अवनवुं वस्त्र वण ने, जे मानीती राजराणीओ पोताना कुचप्रदेश परथी क्षणमात्र पण अळगुं न करे !

भोजचरित्रमां आपेला एक प्रसंगमां कांईक एवा ज तात्पर्यवाळा अने रचनाचातुरीवाळा नीचेना पद्य प्रत्ये शीलचंदविजयजीए मारुं ध्यान दोर्युं :

काव्यं करोमि न च चारुतरं करोमि
यत्नात् करोमि यदि चारुतरं करोमि ।
भूपालमौलिमणिलुण्ठितपादपीठ !
हे साहसाङ्क ! कवयामि वयामि यामि ॥

'हुं काव्य करुं छुं, पण ते सुंदर बनतुं नथी. प्रयास करुं छुं तो (कदीक) सुंदर बनी आवे छे. जेना पादपीठ पासे (नमता सामन्त राजवीओना) मुकुटमणि आळोटे छे (आमथी तेम गति करे छे) एवा हे साहसांक, हुं काव्यरचना करुं छुं, वस्त्र वणुं छुं, जउं छुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org